

DEMONSTRATION MULTI-PURPOSE SCHOOL, MYSORE

1864. SHRI SIDDAYYA : Will the Minister of EDUCATION be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1014 on the 26th July, 1968 regarding the Demonstration Multipurpose School, Mysore and state :

(a) whether the information has since been collected; and

(b) whether it will be laid on the Table of the House ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EDUCATION (SHRI BHAGWAT JHA AZAD) : (a) and (b). The information has since been collected and laid on the Table of the House on 12th November, 1968 vide S. No. 12 of the Supplementary Statement No. I showing action taken on Assurances given during the Fifth Session, 1968 of the Fourth Lok Sabha. EXCERPTS RELATION TO MAHATMA GANDHI'S LIFE

1865. SHRI D. BASUMATARI : Will the Minister of EDUCATION be pleased to state :

(a) whether it is a fact that excerpts from a diary kept by Romain Rolland relating to Mahatma Gandhi's life since 1920 till the death of the author were to be published by the Sahitya Akademi as part of the Gandhi Centenary celebrations;

(b) whether the book has been published; and

(c) whether it has been made available to the public ?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EDUCATION (SHRI SHER SINGH) : (a) Yes, Sir. The work translated from original French is being published in Bengali and Hindi.

(b) The Bengali edition is in press and the Hindi edition is under preparation.

(c) The work, when published, will be available to the public as a priced publication.

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग

1866. श्री एस० एम० जोशी : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा सभी

विषयों के लिये शब्दावली निर्धारित करने और उसे प्रकाशित करने का कार्य 1 जनवरी, 1970 तक पूरा करने का निर्णय कर लिया गया है;

(ख) क्या यह भी सच है कि इस आयोग के नये अध्यक्ष ने अपने पद का कार्यभार सम्भालते समय उम तारीख तक उपरोक्त कार्य पूरा करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया था;

(ग) यदि हाँ, तो जून 1968 से अब तक कितने नये शब्दों को अन्तिम रूप दिया गया; और

(घ) क्या इस गति से शब्दावली तैयार कराने का कार्य उपरोक्त निधि तक पूर्ण हो जाने की सम्भावना है ?

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री शेर सिंह) : (क) और (ख). जी हाँ। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष के परामर्श से यह निश्चय किया गया है कि शब्दावली के निर्माण का कार्य 1-1-1970 तक समाप्त करने का प्रत्येक प्रयत्न किया जाना चाहिये।

(ग) अक्टूबर 1968 तक 31,591 शब्दों को अन्तिम रूप दिया जा चुका है।

(घ) आयोग के शब्दावली कार्य को 1 जनवरी, 1970 तक पूरा करने का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है।

12 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

SALE OF AMERICAN PATTON TANKS TO PAKISTAN THROUGH TURKEY

श्री कंबर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : अध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर प्रतिरक्षा मंत्री का ध्यान दिलाता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि वह इस बारे में एक बक्तव्य दें :

"टर्की के जरिए पाकिस्तान को 100 अमरीकी पॅटन टैंक बेचा जाना और भारत की सुरक्षा पर उसका प्रभाव।"

THE MINISTER OF DEFENCE (SHRI SWARAN SINGH): Mr. Speaker, Sir, Government have seen the Press reports indicating that the Government of the United States has permitted Turkey to sell 100 Patton tanks to Pakistan. According to information available to the Government, an agreement has been reached in principle that Turkey would give 100 Patton tanks to Pakistan in exchange for more modern tanks from the U.S.A. Government have taken up the matter with the countries concerned through diplomatic channels.

It has been pointed out to the countries concerned that such a deal has grave implications both in regard to our own defence responsibilities and to the objective of maintenance of peace in the sub-continent. It has also been pointed out to them that these military supplies would make Pakistan more intransigent in its attitude towards normalisation of relations with India.

Government are of the view that the consequence of such a development would be to accentuate tension in the sub-continent and add to our responsibilities in regard to the security of the country. I would like to assure the House that we on our part would continue to take adequate steps to meet the situation created by Pakistan's military build up.

श्री कंदर लाल गुप्त : अध्यक्ष महोदय, कल मंत्री महोदय ने जबाब देते समय यह कहा था कि युनाइटेड स्टेट्स आफ अमेरिका का रांग असेसमेंट है पाकिस्तान के बारे में। मेरा कहना यह है कि अमेरिका जो हथियार दे रहा है हालांकि पाकिस्तान ने हिन्दुस्तान पर तीन बार हमला किया और वह यह भी जानता है कि चीन भी इस का दुश्मन है और इस के बाद भी अमेरिका भी हथियार दे रहा है, रूस भी हथियार दे रहा है और रूस के एस्टीमेट के मुताबिक अभी तक पाकिस्तान को 640 मिलियन डालर के आर्म्स केवल यू० ए० ने दिए हैं, तो यह रांग असेसमेंट नहीं है यह जानबूझ कर के दोनों देश इस तरह से कर रहे हैं और उन की यह खाहिश है कि अगर इस तरह हम करेंगे तो हिन्दुस्तान

को मजबूरन अपना पैसा, अपनी इनकम आर्म्स के लिये लगानी पड़ेगी और हिन्दुस्तान हमेशा भीख मांगने के लिये उन के दरवाजे पर खड़ा रहेगा। यह वह जानबूझ कर कर रहे हैं। जब उन को यह मालूम है कि इस से पाकिस्तान की अर्टैकिंग पावर और स्ट्राइकिंग पावर बढ़ेगी तो हमें उन को यह साफ तौर से बताना चाहिये कि यह एक अनफ़ेडली होस्टाइल ऐक्ट है और हमारे देश की जनता इस को बहुत जोर से रिजेक्ट करती है। मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूँ, अब इस का एक ही रास्ता है कि जब अमेरिका और रूस दोनों उसको सप्लाई कर रहे हैं तो हम अपने पैरों पर खड़े हों, तो अपने पैरों पर खड़े होने के लिये क्या माननीय मंत्री महोदय बतायेंगे कि जो हमारा इंडिजिनस टैंक प्रोडक्शन है उस की क्या स्थिति है ?

विजयंत टैंक के प्रोडक्शन का जो आप का टागेंट था वह टागेंट पूरा हुआ है या नहीं हुआ है ?

दूसरा सवाल मेरा यह है कि पाकिस्तान की लड़ाई के बाद पाकिस्तान और हमारे देश के पास जो टैंक्स थे उन का रेशियो क्या था और आज वह रेशियो क्या है ?

तीसरे, मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या यह सही है कि इटली, बेल्जियम और ईरान से भी पाकिस्तान पैटन टैंक खरीद रहा है ? यू० ए० ए० ने क्लीअरेंस दे दी है इटली को लेकिन अभी तक उस की सप्लाई रुकी हुई है। वाशिंगटन पोस्ट में यह बात आई है कि यू० ए० ए० ने क्लीअरेंस दे दी है इटली को टैंक के लिये लेकिन अभी तक सप्लाई रुकी हुई है तो यह देश भी वास्तव में पाकिस्तान को टैंक दे रहे हैं या नहीं दे रहे हैं यह भी आप मूचना दीजिए और यह सब कुछ देखते हुए कि चीन के साथ पाकिस्तान की कोलिजन है, पाकिस्तान लड़ाई लड़ने के लिये तैयार है और वह अपनी तैयारी कर रहा है, क्या सरकार मेल्फ रिलायंस के लिये जो न्यूक्लियर डेटरेंट की अपनी पालिसी है उस के बारे में री-थिंक करेगी और क्या वह इजरायल के साथ डिप्लोमैटिक रिलेशंस करेंगी ?

SHRI SWARAN SINGH : Without commenting on the long preambulatory part of the question I would confine myself to the replying of specific points.

The manufacturing programme of Vijayanta tanks is going ahead according to schedule and it is no secret that complete tanks manufactured by us are already in our service.

About the ratio of tanks between Pakistan and India, we have never given any figures relating to this ratio and I have no intention to give any now. But broadly I would like to say that it has meant a heavy burden for us but we had also to take steps to acquire more equipment so that we are not unfavourably placed in relation to Pakistan. We have succeeded in maintaining our equipment at a level which should give us confidence that we can defend ourselves against any attack from Pakistan.

About the Pakistani attempt to acquire tanks from other countries like Italy, Belgium and Iran, it is true that they were making attempts to acquire them from Italy and Belgium but I have no information about their having made any attempt to acquire them from Iran. From Italy and Belgium they have not yet been able to acquire these weapons.

About our nuclear policy, this is not the occasion to go into it. The Government's policy in this respect has been enunciated from time to time and I have nothing more to add to it. Mere acquisition of tanks more or less by one country or the other need not be linked with the nuclear policy. That is a separate subject by itself which should be discussed but not connected with it.

SHRI M. L. SONDHI (New Delhi) : When ?

SHRI KANWAR LAL GUPTA : What steps have Government taken to be self-reliant and self-sufficient ?

SHRI SWARAN SINGH : Self-reliance means that the equipment, which we now purchase from others, we

should progressively manufacture ourselves.

श्री ओम प्रकाश त्यागी (मुरादाबाद) :
 अध्यक्ष महोदय, चाइना पाकिस्तान को सहायता कर रहा है, आर्म्स और एम्पूनिशन दे रहा है और उसका इरादा साफ है कि वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में टेंशन बनाए रख कर अपना लाभ उठाना चाहता है परन्तु रशिया और अमेरिका पाकिस्तान की स्थिति जानते हुए भी कि वह भारतवर्ष पर एक बार अपने हथियारों से आक्रमण कर चुका है और फिर वह आक्रमण की तैयारी कर रहा है, उसे रशिया से खतरा है नहीं, अफगानिस्तान से खतरा है नहीं, चाइना से संकट है नहीं और भारत वर्ष भी अपना इरादा जाहिर कर चुका है कि हम कभी हमला नहीं करेंगे, ऐसी बात जानते हुए भी रशिया और अमेरिका दोनों पाकिस्तान को हथियारों से सहायता कर रहे हैं तो क्या भारत सरकार ने इन दोनों सरकारों से यह जानने का प्रयत्न किया है कि आप पाकिस्तान को यह हथियार किस उद्देश्य से दे रहे हैं ? क्या आप भी पाकिस्तान और भारतवर्ष में टेंशन चाहते हैं ? क्या वह भी हमारे बीच संघर्ष और लड़ाई चाहते हैं, यह कभी आप ने जानने का प्रयत्न किया और किया तो उन्होंने क्या उत्तर दिया ?

मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि भारत वर्ष को चाइना और पाकिस्तान दोनों का मुकाबला करना है, क्या आपने अमेरिका को, जो पाकिस्तान और भारत दोनों को बराबर लेवल पर रखता है, यह पोजीशन स्पष्ट कर दी है कि वह दोनों को एक लेवल पर न रखे, इस लिये कि हम को चाइना से भी लड़ना है ?

तीसरी बात—क्या आप चाइना और पाकिस्तान के मुकाबले अपने आप को इस तरह से तैयार कर रहे हैं कि अगर कल लड़ाई शुरू हो जाय तो आप चाइना और पाकिस्तान दोनों का मोर्चे पर मुकाबला कर सकें ?

SHRI SWARAN SINGH: Really, most of it is argument rather than asking for any factual information. But I will try to be very brief in replying to the specific points that the hon. Member has made.

The first question was: Why are the United States and the U.S.S.R. supplying arms to Pakistan although both of them say that they do not want any tension between the two countries? This is precisely what we have been pointing out to both the countries that they profess to follow a policy that there should be peace between India and Pakistan but their supply of military equipment to Pakistan will have the opposite effect of what they are professing as their policy in this respect. Notwithstanding this, they are not seeing the desirability of not supplying military equipment to Pakistan. What they explain and what they say is a matter which they say from time to time and publicly also and we do not accept the validity of the points that they make.

SHRI M. L. SONDHI: You went to Moscow recently. What did they tell you privately?

SHRI SWARAN SINGH: What they told me privately is not meant for Mr. Sondhi.

श्री मोम प्रकाश त्यागी : वे जो कुछ जवाब देते हैं, क्या आपको उस से सन्तोष है ?

SHRI SWARAN SINGH: I have said already that we do not accept the validity of the reasons that they advance for supplying the arms. But even if you do not accept the validity of their points it is the person who supplies arms who decides. We can go on projecting our view points, doing our best to explain it. But sometimes, notwithstanding all the explanations, those who have a particular view point stick to it just as in many national affairs also that can be the attitude.

Another point was about the threat from both the neighbours. That threat is there and we have made it quite clear in this House and to the country that we do face real danger to our integrity and to our country from this

strong military collusion between China and Pakistan and all our defence plans have to take note of this dual threat.

SHRI BAL RAJ MADHOK (South Delhi): Sir, we have been hearing in this House about the supply of tanks from this country and that country to Pakistan. Because of the latest developments in the armament production, the Patton tanks have become obsolete. Now, the NATO countries in Europe have a surplus of about 7000 Patton tanks. They are equipping themselves with arms which are superior. These 7000 Patton tanks have to be disposed of somehow or other. Whatever assurance and country may have given you or may give you in future, I do not see any possibility how these tanks can be prevented from reaching Pakistan or any other country which is prepared to have those obsolete things from the point of view of European countries. Therefore, I do not think it will serve any purpose of our weeping here that this country and that country is giving tanks to Pakistan.

The question that is important for us is that both U.S.A. and U.S.S.R. whom we claim to be our friends, whom we want to be our friends, are trying to encourage arms race between India and Pakistan with a set purpose that they do not want India to be strong. Neither Russia nor America wants India to be strong. They want to use Pakistan as counter-balance for India. In view of the fact that Pakistan is our enemy, China is our enemy, there is collusion between the two, and because of a more realistic foreign policy, Pakistan has been able to get arms first from America, then from China and now from Russia and also from other countries in an indirect way, may I know what you mean when you say that our preparations are adequate? India is four times bigger than Pakistan and, therefore, any military balance between India and Pakistan means that India should have at least four times land forces, four times air forces and four times naval forces, compared to

Pakistan. Is that balance being maintained? Then, we have not to maintain balance only with Pakistan. Pakistan and China are allies. We have to maintain some kind of a military balance with Pakistan and China put together. Therefore, may I know what you mean when you say that we are also making adequate preparations? I want a clear and specific answer as to what you mean by this. If you think that we are having equal strength with Pakistan, that is not adequate; by that, you are deceiving the country and also deceiving yourself. You may, therefore, tell us as to what you mean by 'adequate'.

Secondly, I want to know this. America and Russia are now supplying arms to our enemies also and, therefore, it is not a very sound policy to depend on them. What are we doing to diversify our imports and get our requirements from the other countries also which are producing armaments like Germany, France, Sweden, Czechoslovakia and Yugoslavia, in order to reduce this over-dependence on America and Russia?

Thirdly, in the question of defence, foreign policy is a very important factor. With the foreign policy which is going in different tangents, you cannot have your defence, and in view of the fact that Pakistan and China are allies, what are we doing to re-orientate the foreign policy of the country, so that we can also have some friends and there is at least some correlation and co-ordination between the foreign policy and the defence of the country?

SHRI SWARAN SINGH: The first question is this: if our forces, our equipment and our strength are equal to Pakistan, will that be regarded as an adequate arrangement on our side? I fully agree that that is not an adequate arrangement because we have a dual threat, from China and from Pakistan, and it is this aspect which has to be understood by our friends abroad also because any talk of military balance, which expression itself we do not accept, is absolutely unreal if the threat from one side is calculated

and the threat from the other side is not calculated. There is no question of military balance between India and Pakistan when we face danger from two sides. Pakistan, even according to their statement, has got no enmity with any one except India. It is quite obvious that this expression which is often used by certain countries—I do not want to name them—of military balance is absolutely unreal. We have to look to the realities of the situation that our country faces—this dual danger—and all our preparations are on that basis. (*Interruptions*) When I say that our arrangements are adequate, I do not mean to convey that they are equal to Pakistan because we have a dual threat. Therefore, the other threat has to be kept in view, and I make that statement knowing this dual threat.

The second point was about diversification of the sources of supply. We are not over dependent on any particular country. We have no inhibitions in getting equipment from any quarter that we can get. This was our policy all along and this will continue to be our policy, because we pay for whatever we acquire and in this wide world, there are several sources from which we can acquire equipment that may be required by us to meet our essential requirements.

The third question related to foreign policy. I think, it is better that we discuss it when our foreign policy is discussed rather than doing it now.

SHRI BAL RAJ MADHOK: Any steps contemplated to correlate the defence policy with the foreign policy?

SHRI SWARAN SINGH: We are absolutely in touch with each other—both Defence and Foreign; otherwise, we cannot function.

12.20 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE
PUNJAB LOCAL AUTHORITIES (AIDED SCHOOLS) AMENDMENT ORDINANCE, 1968

THE MINISTER OF EDUCATION (DR. TRIGUNA SEN): I beg to lay on the Table a copy of the Punjab Local Authorities (Aided Schools)